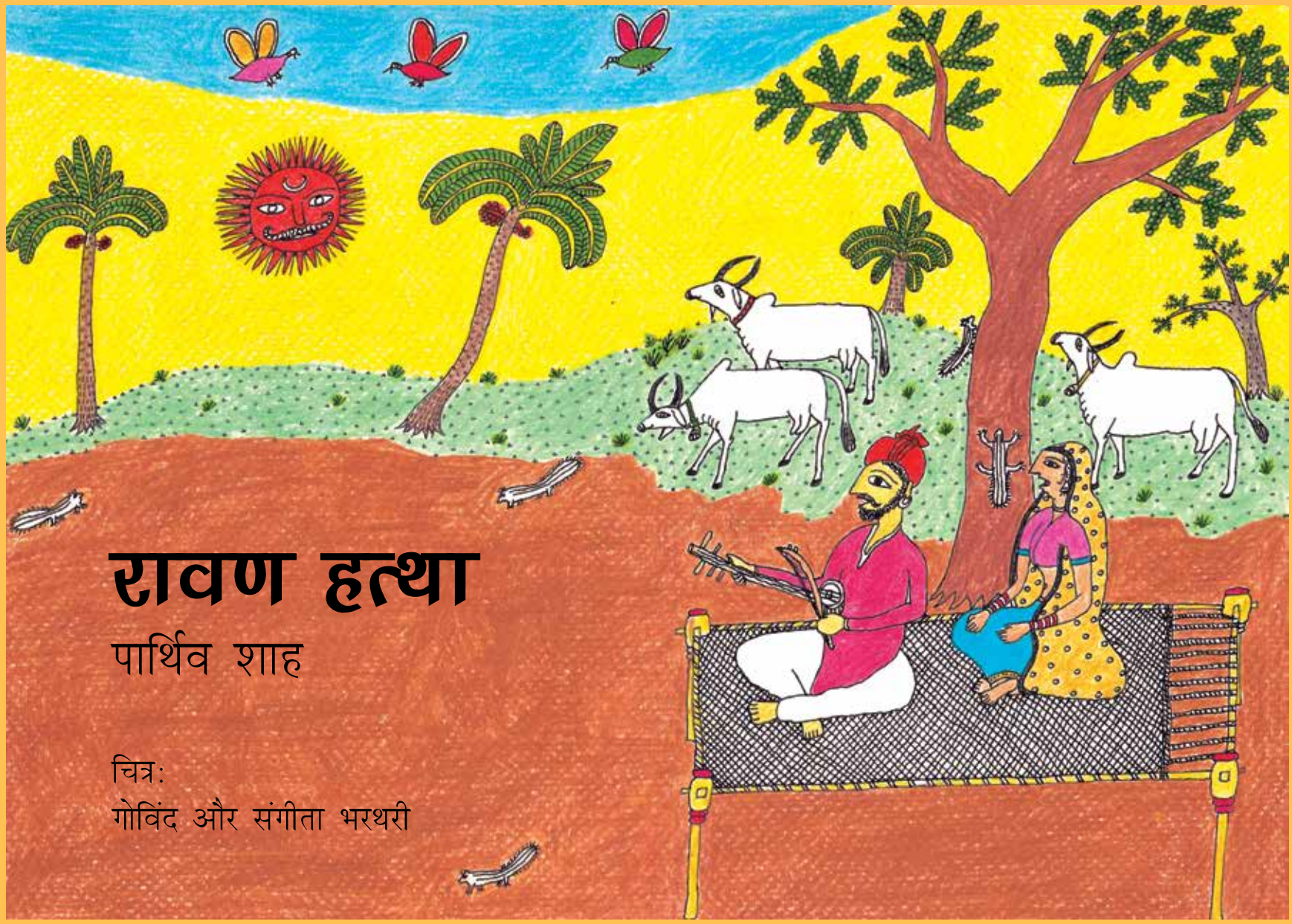

रावण हत्था

पार्थिव शाह

चित्र:
गोविंद और संगीता भरथरी

Bharat ke Kaladharmi is an innovative project, initiated during the COVID pandemic, that supports both the tangible and intangible heritage of the country through technical capacity building, archiving documentation and offline events.

Project supported by
Coal India Limited

Published in India, 2023 by

CMAC
Centre for Media and Alternative Communication
www.cmacindia.org email: cmacindia@gmail.com

Co-Published by

BHOOMA
Trust for Indian Culture
email: bhoomatrust@gmail.com

© CMAC

All rights reserved under international copyright conventions. No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, reccording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the publishers.

Story by Parthiv Shah
Illustration by Govind and Sangita Bharthari
Designed & Produced by CMAC, New Delhi

ISBN: 81-7863-000-7

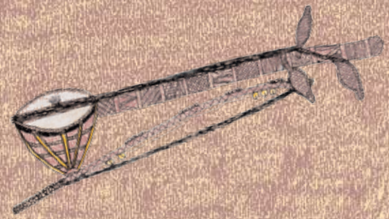

रावण हत्था

पार्थिव शाह

चित्र:
गोविंद और संगीता भरथरी

गोविंद अपने कुटुंब के साथ अहमदाबाद के बाहरी इलाके में झुग्गी–झोपड़ी में रहता है। वो अपनी मां तेजु, बहन संगीता, भाई प्रकाश वगैरह के साथ रहता है। उसका घर छोटा–सा है मगर सब मिल–जुल कर अंदर और बाहर काम करते हैं और रहते हैं। उसके घर में ज्यादा चीजें नहीं हैं, बस कुछ बर्तन, मटका, थोड़ी किताबें, चित्र करने की नोटबुक, कागज, कुछ टीन के बैग जिसमें कपड़े रखते हैं और एक दीवार पर खिड़की के पास उसके पिताजी का रावण हत्था टंगा रहता है। जब वो छोटा था तब उसको वो सीखना था पर पिताजी ने कहा कि बड़े होने पे उसको रावण हत्था सिखाएंगे। रावण हत्था उसके पिताजी बजाते हैं और उसकी मां के साथ गाना गाते हैं! रावण हत्था की आवाज खूब सुरीली है, बिल्कुल सारंगी जैसी।

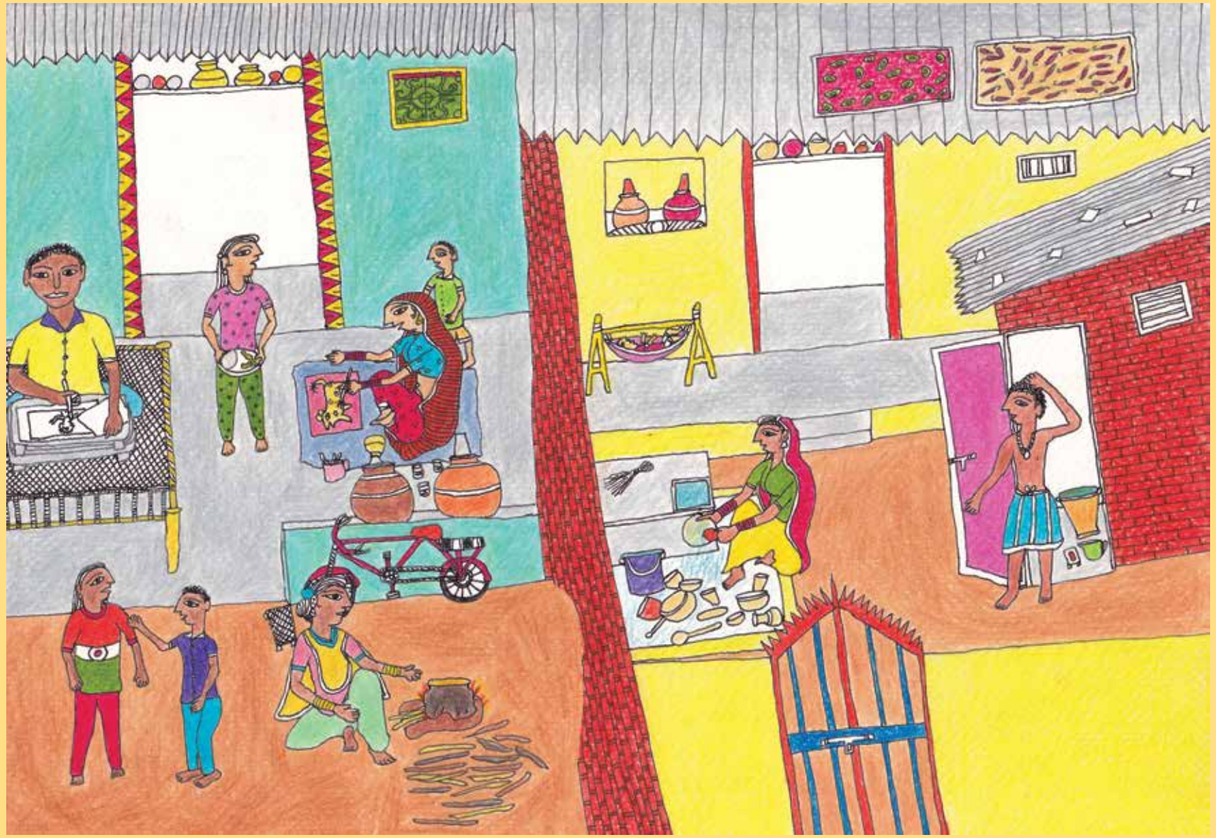

छुटपन से उसको अपने दोस्तों के साथ गाना गाना, पतंग उड़ाना, कंचे खेलना, पेड़ पे चढ़ जाना, टायर के साथ भागना, गिल्ली-डंडा खेलना बहुत पसंद था। स्कूल पाँचवी के बाद छूट गई क्योंकि वो नए घर में आ गए जहां नजदीक में स्कूल नहीं था। उसको हमेशा लगता है कि उसको पांचवी कक्षा के बाद शिक्षा जारी रखनी चाहिए थी।

वो घर में छोट-मोटे काम करता था और पैसे कमाने के लिए कभी-कभी साइकिल की दुकान पर पंचर ठीक करना, हवा भरने का काम करने लगा। कभी वो चाय की दुकान पर भी काम करता था। कुछ समय वो घर बनाने के लिए कडिया काम मिस्त्री के साथ करता रहा।

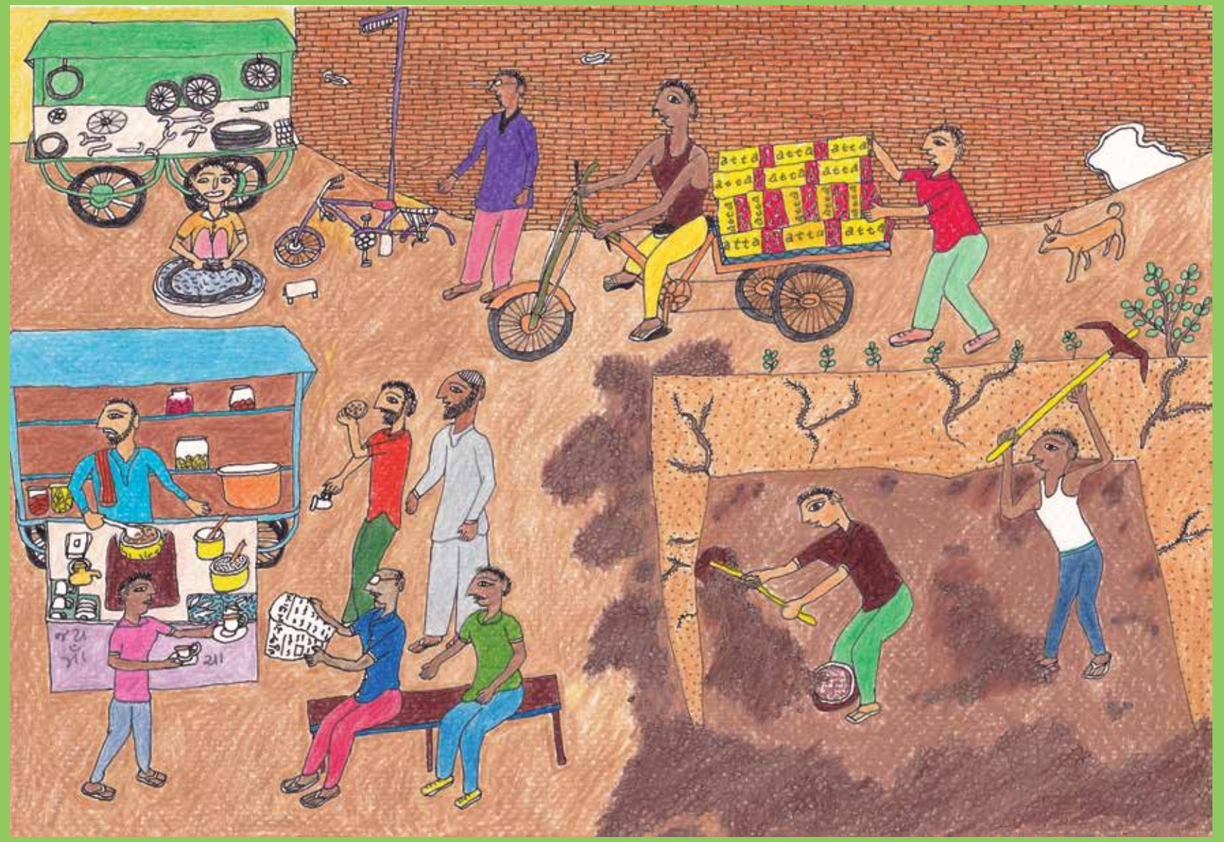

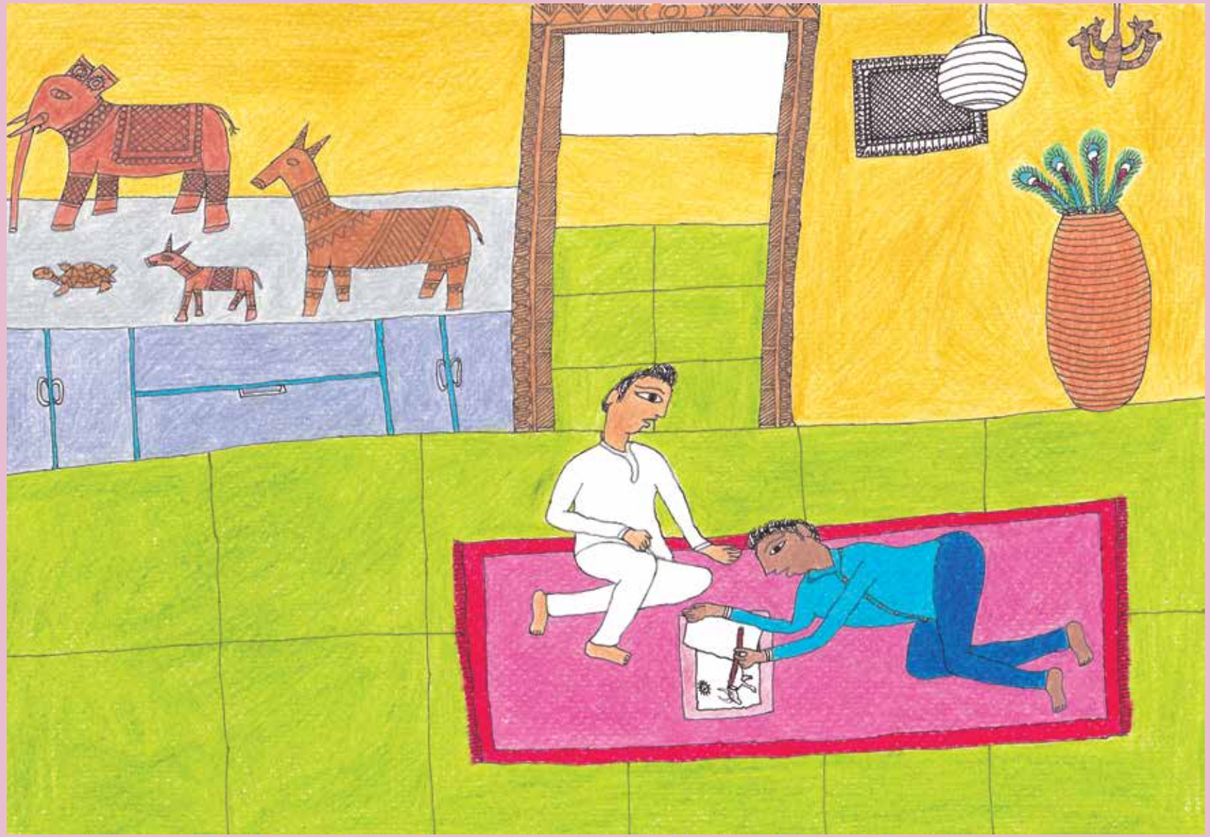

एक दिन उसके पिताजी गणेश जोगी उसे हकु भाई शाह के घर ले गए। गोविंद के पिताजी और उसकी मां तेजु उनके यहां जाते थे। उनको वे रावण हत्था के साथ गाना सुनाते और चित्र भी करते थे। उसकी मां और बहन भी उनके घर चित्र बनाते थे! उन्होंने गोविंद को भी कागज और कलम दिया चित्र बनाने को। गोविंद चित्र में कुत्ता, बिल्ली, अहमदाबाद के रास्ते, बाजार वगैरा बनाने लगा! हकु सर का घर एक अजायबघर जैसा था, उनके घर में हजारों चीजें थी – मिट्टी की, लकड़ी की, घास की, कपड़ों की; हकु सर खुद भी एक चित्रकार थे और उनको चित्र बनाते देखना उसे बहुत पसंद था। वो भी गोविंद को पसंद करते थे। उनके घर में दो झूले थे, उस पर गोविंद को झूला झूलना अच्छा लगता था। उसके पिताजी कभी-कभी कहते थे कि वो गाना सीखें और रावण हत्था भी, और एक गायक बने, मगर उसे चित्र बनाना ज्यादा अच्छा लगने लगा था।

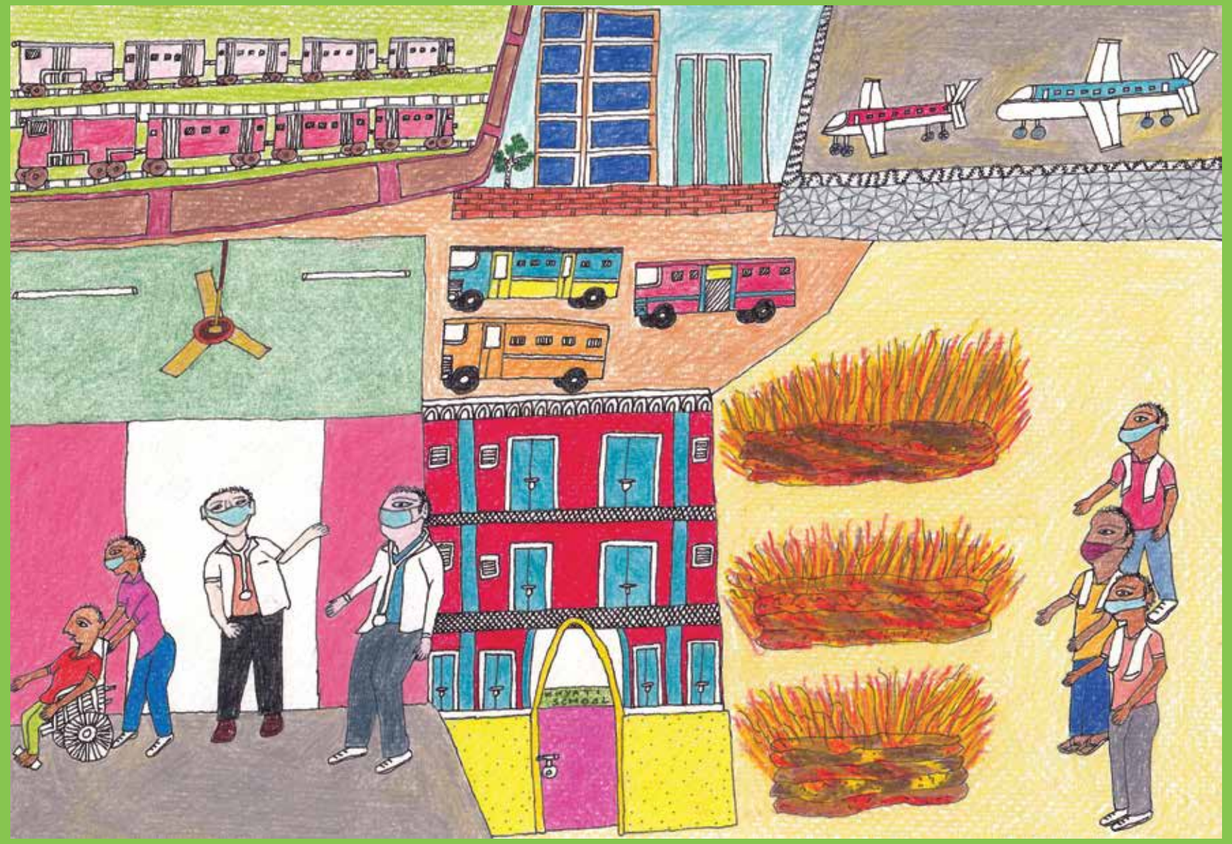

कुछ साल पहले पूरी दुनिया कोरोना की महामारी के साथ लड़ाई लड़ रही थी। हर आदमी परेशान था। सब कुछ बंद था – स्कूल, फैक्ट्री, हवाईजहाज, बस, ट्रेन, बाजार – सिर्फ अस्पताल खुला था, खाने-पीने की चीजें कुछ दुकानो में ही मिल रही थी। बहुत लोग बीमार होने लगे, कई सारे लोग मरने लगे, श्मशान में भी मुर्दो की लाइन लग गई! सब घर से बाहर नहीं निकल सकते थे – गोविंद का दोस्तों से मिलना और खेलना बंद हो गया था।

वो तो अच्छा था कि गोविंद का परिवार अहमदाबाद शहर के बाहर रहता था। वहां आसपास खेत थे और किसान गाय भैंस रखते थे जिन से उनको दूध और सब्जी मिल जाती थी। सब लोग परेशान थे और ज्यादा दिन काम के बिना, पैसैं के बिना रहना मुश्किल था। कुछ संस्थाओं ने उनका साथ दिया, उनके चित्र खरीदे और कुछ खाने-पीने की वस्तुएं दीं और कुछ पैसे दिए। मगर ऐसा ज्यादा दिन नहीं चल सकता था। पैसे खत्म हो रहे थे। शहर में रहना मुश्किल हो रहा था।

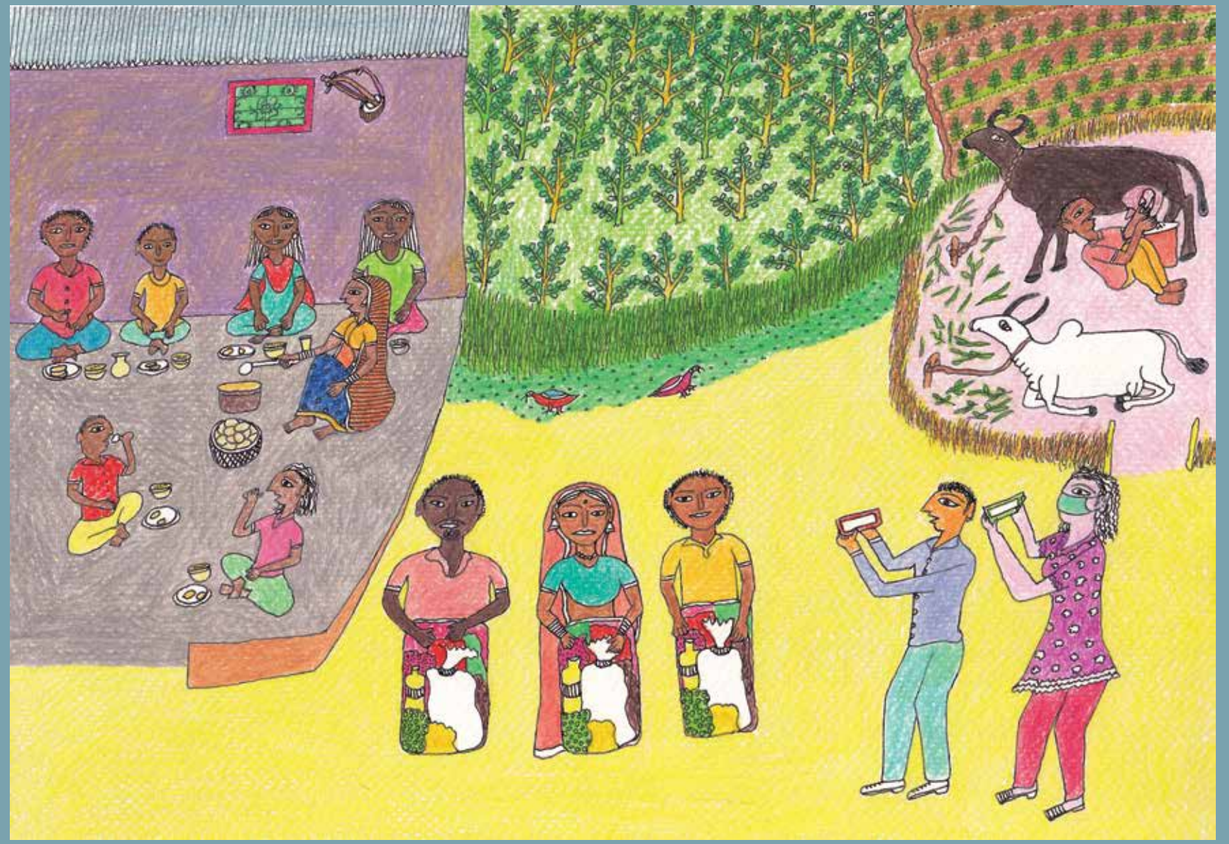

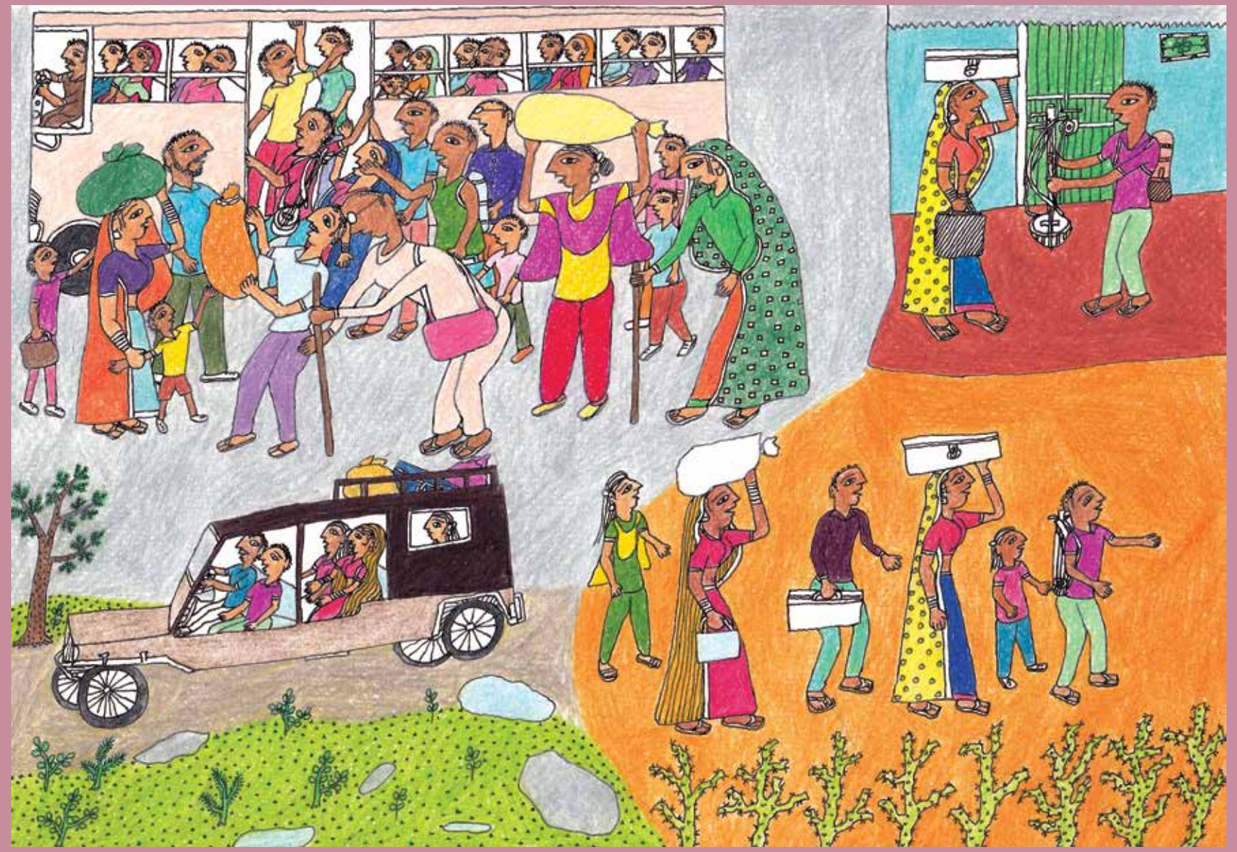

तब सब लोगो ने सोचा कि उनको उनके गांव मगरीवाडु, जो कि राजस्थान में है, वहां चले जाना चाहिए। वहां गोविंद के दादा, दादी, चाचा, चाची और भी कई कुटुंबी और बहुत सारे उसके दोस्त रहते थे। सब लोगों ने और कुछ पड़ोसी ने बैग और बिस्तर बांध लिए। कुछ जरूरी कागजात, पैसे, कपड़े, दवाईयाँ और प्यारा रावण हत्था लेकर वो निकल पड़े। देर रात में उन्होने बॉर्डर से बस ली। भीड़ बहुत थी, बहुत लोग पलायन कर रहे थे और अपने-अपने गांव जा रहे थे। कुछ बहुत बूढ़े थे और कुछ छोटे-छोटे बच्चे।

धक्का-मुक्की करके सब बस में घुस गए। बस राजस्थान गुजरात की सीमा तक ही जाने वाली थी। वो सुबह-सुबह आबु रोड पर पहुंचे और वहां से वे जीप में बैठे और करीब दस किलोमीटर दूर उनको जीप के ड्राइवर ने उतार दिया। वहां से वे पैदल चल कर दो घंटे में घर पहुंचे। जब वो घर पहुँचे तब तक वे थक चुके थे, पानी और खाना भी खत्म हो चुका था।

मगरीवाडुं एक छोटा–सा गांव है। वहां ज्यादातर लोग खेती करते हैं या मवेशी हैं जो बकरी, गाय चराते हैं। गोविंद के दोस्त के पिताजी कुम्हार हैं जो मटके, कलेडी, कवेले, बनाते हैं। उनको देख कर दादा, दादी और कुटुंबी बहुत खुश हुए। गोविंद पहले मगरीवाडुं गांव में स्कूल की छुट्टियों में आता रहता था। जहां की खुली जमीन, खेत, पहाड़, नदी उसको बहुत पसंद है। डुंगर पे बड़े–बड़े पत्थर और जंगल है, वहां वो छुपन–छुपाई खेलता था। उसके गांव में एक छोटी नदी है जिसमें बारिश के समय ज्यादा पानी होता है, सब नदी में तैरने जाते थे। यहां सब कोई साथ–साथ रहते हैं, जैसे कि गाय, भैंस, बकरी, छोटे बिच्छू, सांप, कुत्ता, बिल्ली, अनगिनत पक्षी, और हां, उसका खास चहेता मोर भी, जो मंदिर के आंगन में नाच दिखाता है।

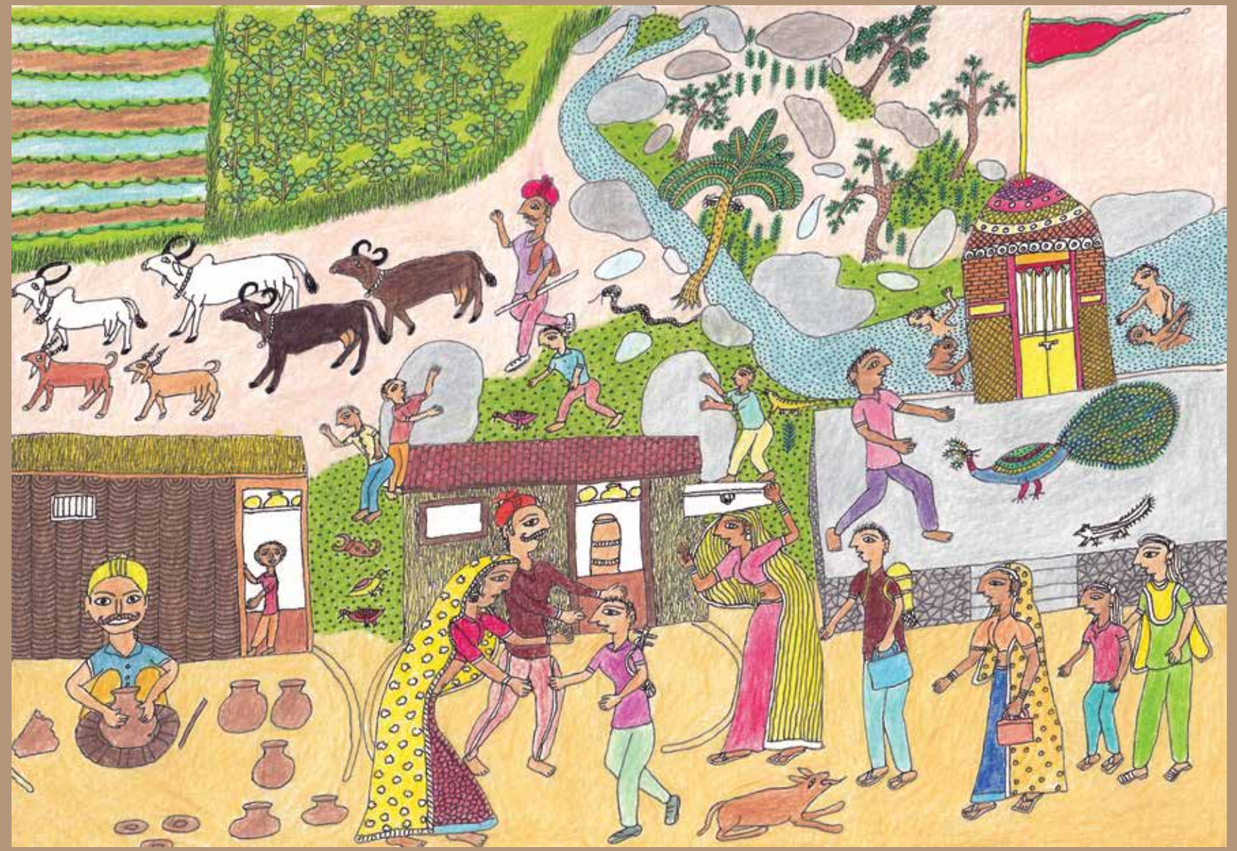

गांव में बिजली पूरे समय नहीं रहती, ज्यादा लोग घर के बाहर ही समय बिताते हैं! बहुत लोग रात में खटिये पे घर के बाहर खुले आकाश के नीचे सोते हैं। गोविंद भी अपनी दादी के साथ एक रात सो रहा था, उसकी दादी को तारे और नक्षत्रों के बारे में बहुत पता है। वे तारों से भरा आकाश देख रहे थे और अहमदाबाद में बिजली की चकाचौंध और प्रदूषण की वजह से नहीं दिखते वो सब तारे अब नजर आ रहे थे। दादी ने उसे सप्तऋषि, चित्रा, हस्त वगैरह नक्षत्रों की और ध्रुव, गुरु, शनि वगैरह ग्रहो की पहचान कराई, गोविंद तारों को देखते हुए सो गया। नींद में उसे सपना दिखा जिसमे उसके पिता गणेश एक गीत गा रहे थे रावण हत्था के साथ। एक हाथ में **Bow** था और दूसरे हाथ में हत्था था। जब गीत खत्म हुआ तो उन्होंने कहा, अब तुम रावण हत्था सीख लो, अब तुम्हारे पास समय भी है और दादा जैसे गुरु भी हैं। दूसरी सुबह वो जल्दी उठ गया और दादा को उसके सपने की बात बताई तो वो बहुत खुश हुए और कहा, चलो, पहले मैं तुम्हें रावण हत्था की एक कहानी सुनाता हूं।

रावण लंका का राजा था। वह एक बड़ा शिव भक्त था। शिव की आराधना करते करते उसको बहुत साल हो गये शिव फिर भी उसकी भक्ति और तप से प्रसन्न नहीं हुए तो रावण ने सोचा, ये शरीर मुझे शिव को अर्पण करना चाहिए। वो हिमालय पर्वत पर गया और कठोर साधना करने लगा।

रावण ने अपने बाल काट दिए, उसके बाद उसने अपनी जीभ काट दी, फिर उसने शरीर की चमड़ी उतार दी, हाथ के बाजू में से नसें निकाल दी, फिर उसने अपनी आंतें निकाली, फिर एक पैर काटा, सिर काटा और आखिर में पांच उंगलियां काट के शिव के सामने भेंट कर दी।

इसके बाद उसने अलग-अलग अंगों की छटाई शुरू करी। सर का बनाया टोपाळु, बाल और पैर को लेकर बनाई पिंजणी। उसके बाद हाथों की नसों से बनाए तार। टोपाळु पर चमड़ी लगाकर और आंत से बांध कर टोपाळा की रचना की। टोपाळु के नीचे नाभि रखी जिससे उसको एक आधार मिले। शरीर का बनाया नाळ, जीभ में नसों को पिरोकर उंगुलियां को नाळ मे पिरोया और ऐसे बना योजणा। ये सब शरीर के अलग-अलग भाग जोड़ कर रावण हत्था की रचना की।

रावण ने ये वाजिंत्र जो कि सारंगी जैसा था, उसको बजाकर शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने ये वाजिंत्र का नाम रावण हत्था रखा और रावण को वरदान दिया, जिसकी वजह से उसके दस सिर बने और वो बहुत विद्वान बना।

ये कहानी सुनने के बाद उसे दादाजी ने रावण हत्था सिखाना शुरू किया। गोविंद को उन्होंने और उसके चाचा ने बहुत सारे गाने भी सिखाए जो वो रोज नियमित तरीके से अभ्यास करने लगा।

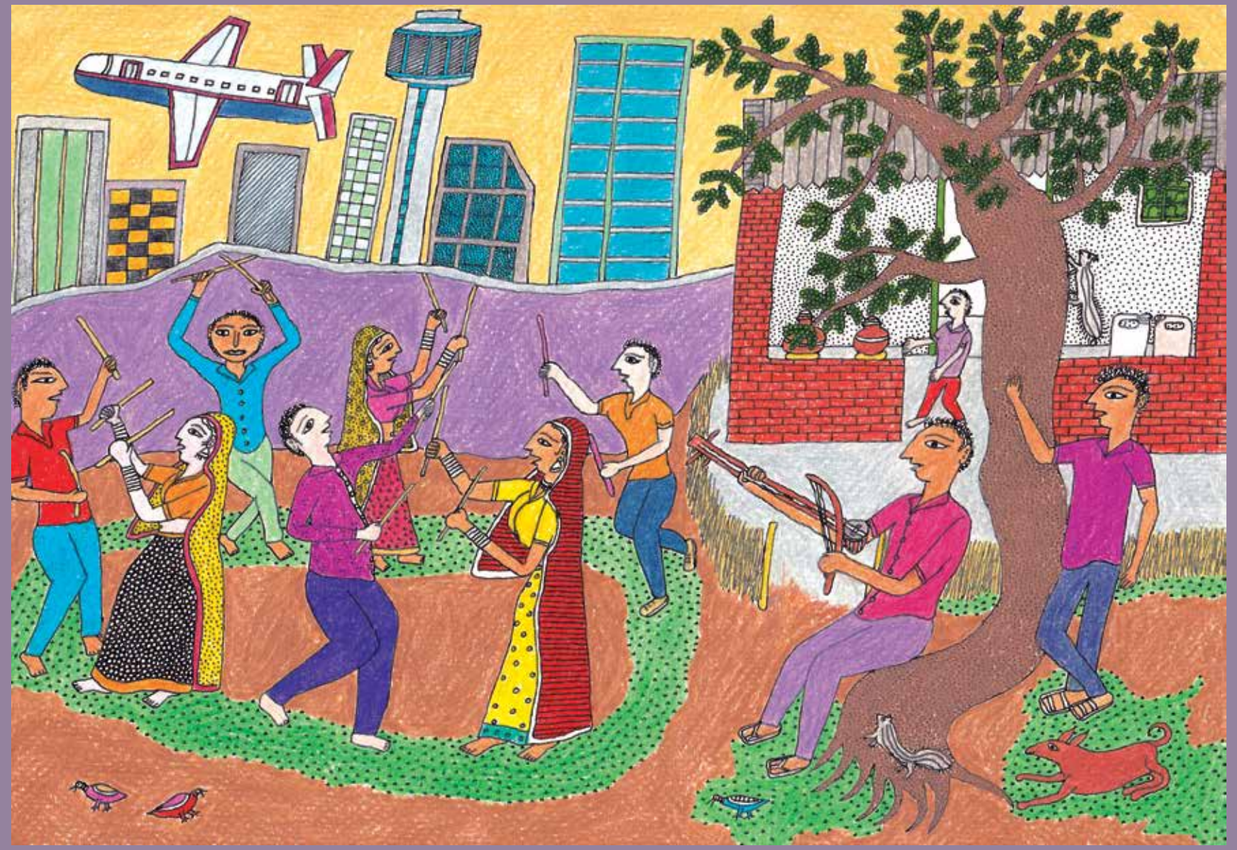

लॉक डाउन भी खत्म हो गया था, लोग अपने-अपने घरों में वापस जाने लगे थे। तो वे भी अहमदाबाद की ओर निकल पड़े। अब उसे एक नया दोस्त मिल गया था –रावण हत्था, जिसको अब वो सुबह-शाम बजाता है और अपने पिताजी को याद करता है।

गोविंद जोगी एक जन्मजात चित्रकार है। उन्होंने चित्र बनाना अपने पिता गणेश और माता तेजु जोगी से सीखा। उनके पिता गणेश जोगी एक गायक थे। श्री हकु शाह जो कि भारत के जाने माने चित्रकार थे, उन्होंने गणेश, तेजु और गोविंद को चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया और मार्गदर्शन दिया। गोविंद अपनी पत्नी संगीता और कुटुंब के साथ अहमदाबाद, गुजरात में रहता है और चित्र बनाता है।

पार्थिव शाह एक जाने–माने ग्राफिक्स डिजाइनर, फोटोग्राफर और फिल्मकार हैं। उन्होंने अपनी शिक्षा राष्ट्रीय डिजाइन संस्था, अहमदाबाद से प्राप्त की। उनकी विशेषता दृश्य संचार विषय में है। पार्थिव को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे कि संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा फोटोग्राफी, वरिष्ठ फेलोशिप, चार्ल्स वालेस पुरस्कार, फुलब्राईट पुरस्कार आदि। आजकल वो सेंटर फॉर मीडिया एंड अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन (CMAC) में निदेशक हैं और दिल्ली में रहते हैं।